Effect of Saturn in the events of Ramayana

(रामायण की घटनाओ में शनिग्रह का प्रभाव)

Jayendra Vallabh Dubey; Dr. Yogendra Kumar

Research Scholar; Assistant professor, Department of Jyotish

Maharishi University of Management and Technology, Mangala Bilaspur (C.G)

DOI: 10.52984/yogarima1202

सार -

इस शोध पत्र में आदिकवि वाल्मीकि जी द्वारा रचित आदिकाव्य रामायण, तुलसीदास कृत रामचरित मानस, पद्म पुराण आदि में लिखित रामायण से सम्बंधित घटनाओं पर शनि ग्रह की स्थिति का प्रभाव, रामायण काल में उपस्थित पात्रों से शनि देव का संवाद आदि का अध्ययन किया गया है रामायण काल को परंपरागत मान्यता एवं पुराणों के अनुसार ८,८०,१११, वर्ष प्राचीन माना जाता है और आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से ७००० वर्ष के आसपास प्राचीन माना जाता है इस शोध पत्र में इतने वर्ष पूर्व भी कुंडली में शनिग्रह की स्थिति से होने वाले प्रभाव के प्रति जनसामान्य में जागृति, शनि की दशा से भय आदि का अध्ययन किया गया है /

शब्द संकेत - रामायण ,राम, शनि ,ज्योतिष ,त्रेतायुग

"ततो यज्ञे समाप्ते ऋतूनां षट
समत्ययु:|
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिर्थौ
||८||
नक्षत्रे अदिति दैवत्ये स्वोच्च
संस्थेषु पञ्चसु|
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुनासह||९||
प्रोधमाने जगन्नाथ सर्वलोक नमस्कृतम|
कोसल्याजनयद रामं दिव्यलक्षण संयुतम
||१०|| [1]

इस श्लोक का अर्थ है "यज्ञ समाप्ति के पश्चात जब छः ऋतुएं बीत गयीं तब बारहवें मास मे चैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कोसल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त सर्वलोक वन्दित जगदीश्वर श्री राम को जन्म दिया | उस समय पांच ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र) अपने अपने उच्च स्थान में विध्यमान थे | तथा लग्न में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति विराजमान थे |

वाल्मीकि जी द्वारा बताई गयी यह स्थिति इस बात का मार्ग प्रकाशमय करती है की भगवान श्री राम के जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति के कारण उनके चरित्र ,भाग्य तथा नियति का जो निर्माण हुआ उसमे शनि ग्रहका उच्च स्थान में होना भी एक बड़ा कारण है |ज्योतिषीय सिद्धांत एवं गणनाओ के अनुसार शनि

[1] वा.रा.बा.स.१८,श्लो.८,९,१०

एक राशि में ढाई वर्ष तक रहते है | सूर्य एक राशि में १ मास तक रहते हैं तथा गुरु एक राशि में १ वर्ष तक रहते हैं कुछ विद्वानों ने सूर्य, गुरु और शनि के विचार से गणना कर एक निष्कर्ष यह भी निकाला कि भगवान का जन्म आज से १,८५,५८,११२ वर्ष पूर्व हुआ था | विभिन्न मतभेदों के साथ इस जन्मांग चक्र को भगवान् राम का जन्मांग चक्र माना जाता है

|

अनेक मतभेद होने के बाद भी शनि की स्थिति में मतभेद नहीं है क्योकि आदिकवि वाल्मीकि द्वारा इस स्थिति को बताया गया है और वाल्मीकि जी का अस्तित्व रामायण काल का ही है|

भगवान राम की जन्मकुंडली में शनि तुला राशि में स्थित है तुला राशि के शनि जातक को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के साथ उच्च स्थिति प्रदान करते हैं ऐसे जातक शिष्टाचारी, ज्ञानी, विद्वान् और प्रसिध्द होते हैं भगवान राम के जन्म के समय गुरु की महादशा अंतिम चरणों में थी जो जन्म के चार वर्षों तक रही उसके बाद शनि की महादशा १९ वर्षो तक रही शनि की महादशा के काल में श्री राम ने विध्याअध्ययन करते हुए राजकुमार के रूप में सुख प्राप्त किये तत्पश्चात शनि की महादशा समाप्त होने के बाद बुध की महादशा में श्री राम को वनवास ,पत्नी वियोग जैसे अनेक कष्ट भोगने पड़े | कुंडली में शनि की उच्च स्थिति का भगवान् राम के न्यायशील और धर्मपालक चरित्र के निर्माण में भी योगदान माना जाता है

इसके अतिरिक्त आदिकवि वाल्मीकि जी ने सीता हरण के समय रावण को शनिश्चर की संज्ञा देते हुए कहा है |

“अभव्यो भव्यरूपेण भर्तारमनुशोचतीम|
अभ्यवर्तत वैदेहीं चित्रामिव शनैश्चरः||९||

अर्थात उस समय विदेहराजकुमारी सीता अपने पति के लिए शोक और चिंता में डूबी हुयी थी उसी अवस्था में अभव्य रावण भव्य रूप धारण करके उनके सामने उपस्थित हुआ मानो शनैश्चर ग्रह चित्रा नक्षत्र के सामने जा पंहुचा है इस श्लोक के माध्यम से आदिकवि वाल्मीकि जी ने सीता जी को सुन्दर चित्रा नक्षत्र की संज्ञा दी है तथा रावण को शनैश्चर की संज्ञा देते हुए शनि के स्वरुप का अप्रत्यक्ष रूप से वर्णन किया है | जिस प्रकार शनि को कृष्णवर्णी तथा कुरूप कहा गया है तथा उनके द्वारा भव्य वस्त्र धारण किये जाते हैं उसी प्रकार अभव्य रावण भी शनि की तरह भव्य वस्त्र धारण करके सीता जी के समक्ष उपस्थित हुआ|

पद्म पुराण के अनुसार एक कथा इस प्रकार है एक बार शनि कृतिका नक्षत्र

के अंत में थे तब वशिष्ठ आदि विद्वानों ने राजा दशरथ को बताया की शनिदेव रोहिणी नक्षत्र को भेदकर जाने वाले है इस घटना को शकट भेद के नाम से जाना जाता है ज्योतिष शास्त्र में शकट भेद को बारह वर्ष दुर्भिक्ष का कारक बताया गया है राजा दशरथ ने श्री वशिष्ठ व् अन्य विद्वानों से इसका परिहार पूछा तो वशिष्ठ जी ने बताया कि इस योग का परिहार ब्रह्मा जी के पास भी नहीं है ऐसा सुनकर राजा दशरथ अपने दिव्य रथ से नक्षत्र मंडल पहुंचे और संहारास्त्र नाम के एक दिव्य अस्त्र को धनुष पर चढ़ाकर शनि को लक्ष्य बनाकर खींचा| राजा के पराक्रम और पौरुष को देखकर शनिदेव ने वर देने की इच्छा प्रकट की तब राजा दशरथ ने सूर्य एवं चन्द्र के अस्तित्व तक रोहिणी का भेदन नहीं करने का निवेदन किया तथा दुसरे वरदान में भी शकट भेद नहीं करने का निवेदन किया, एवं बारह वर्षो तक दुर्भिक्ष नहीं करने का भी कामना कही, शनि ने यह वर भी दे दिया | तब राजा ने धनुष को रख दिया एवं हाथ जोड़ कर शनि देव की स्तुति करने लगे | दशरथ जी द्वारा की गयी स्तुति को शनि देव द्वारा मान्यता दी गयी शनि देव ने राजा को वर देते हुए कहा की जो इस स्तुति को पड़ेगा वह पीड़ा से मुक्त हो जायेगा | मेरे किसी प्राणी के मृत्यु स्थान, जन्मस्थान या चतुर्थ स्थान में होने पर भी उसे कष्ट नहीं होगा |जो मेरी लोहमयी सुन्दर प्रतिमा का शमी पत्र से पूजन करके तिलमिश्रित उड़द दाल भात लोहा काली गो या काला वृषभ ब्राहमण को दान करता है तथा हाथ जोड़कर इस स्त्रोत का जप करता है उसकी मृत्यु बिना पीड़ा के होगी|

"नमः कृष्णाये नीलाये शितिकंठनिभाए च |
नमः कालाग्निरूपाये क्रितान्ताये च वै नमः||
नमो निर्मान्सदेहाय दीर्घशमश्रुजटाए नमो |
नमो विशालनैत्राये शुश्कोदरभयाकृते||
नमः पुष्कलगात्राए स्थूलरोम्णे च वै पुनः |
नमो दीर्घाय शुष्काये कालदंष्ट्र नमोस्तुते ||
नमः कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याये वै नमः | नमो घोराए रोद्राए भीषणाय करालिने ||
नमस्ते सर्वभक्षाये बलीमुख नमोस्तुते |
सूर्यपुत्र नमस्तेअस्तु भास्करे अभयदाय च||
अधोदृष्टे नमस्तेअस्तु संवर्तक नमोअस्तु ते |
नमो मंद्गते तुभ्यं निस्त्रींशाये नमोअस्तु ते||
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताये च | नमो नित्यं क्षुधार्ताये अत्रिप्ताये च वे नमः ||
ज्ञानचक्षुरनमस्तेअस्तु कस्यपात्मजसूनवे |
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसी तत्क्षणात्||
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविध्याधरोरगाः | त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः||
प्रसादं कुरु में देव वराहोअहमुपगताः||"

पं. शिवनाथ जी दुबे ने अपनी पुस्तक 'हनुमान लीलामृत जीवन और शिक्षाये "में हनुमान जी एवं शनि देव का प्रसंग प्रस्तुत किया है जिसके अनुसार भक्तराज हनुमान जी जब रामसेतु के

निकट भगवान श्रीराम का ध्यान कर रहे थे उस समय अपने पराक्रम और अहंकार के अभिभूत होकर शनिदेव ने हनुमान जी से युद्ध का आवाहन किया। हनुमान जी द्वारा विनम्रतापूर्वक परिचय पूछने पर शनिदेव ने अहंकार पूर्वक उत्तर दिया

"मैं परम तेजस्वी सूर्य का पराक्रमी पुत्र शनि हूँ| जगत मेरा नाम सुनते ही काँप उठता है । मेने तुम्हारे बल पौरूष को कितनी ही गाथायें सुनी है। इसलिये मैं तुम्हारी शक्ति की परीक्षा करना चाहता है| सावधान हो जाओ, मैं तुम्हारी राशि पर आ रहा हूँ । शनि के अनेक तिरस्कृत वचनो एवं युद्ध के आवाहन को अनेक बार शालीनता से मना करने पर जब परिक्रमा की जाने लगी। हनुमान जी ने अनेको बार शनिदेव् को अपनी पूँछ से शिलाओं पर पटका एवं लहुलुहान कर दिया। तब शनिदेव ने हनुमान जी से क्षमा मांग कर अपने संकट को समाप्त किया। हनुमान जी ने कहा "यदि तुम मेरे भक्त की राशि पर कभी न जाने का वचन दो तो मैं तुम्हे मुक्त कर सकता हूँ और यदि तुमने ऐसा नही किया तो मैं तुम्हे कठोरतम दंड प्रदान करूंगा।

सुरवन्दित वीरवर निश्चय ही मैं आपके भक्त की राशि पर कभी नहीं' जाऊँगा।' पीड़ा से छटपटाते शनि ने अत्यन्त आतुरता से प्रार्थना की । आप कृपा पूर्वक मुझे शीघ्र बन्धनमुक्त कर दीजिये|"[2]

गीताप्रेस गोरखपुर के कल्याण पुस्तक के २०१४ के विशेषांक 'ज्योतिषतत्वांक' में ज्योतिर्विद श्री कृष्ण शर्मा द्वारा रचित 'मैं शनि हूँ' नामक लेख के एक अंश के अनुसार-

"छः शास्त्र और अठारह पुराणों के प्रकाण्ड पण्डित रावण का पराक्रम तीनो लोको में फैला हुआ था। मेरी दशा में रावण घबरा गया। अपने बचाव के लिये वह मुझ पर आक्रमण करने पर उतारू हो गया। उसने शिव से प्राप्त त्रिशूल से मुझे घायल करके अपने बन्दीगृह में उलटा लटका दिया। हनुमान जी ने मुझे छुटकारा दिलाया। मैंने हनुमान जी से मेरे योग्य सेवा बताने का अनुरोध किया तो हनुमान जी ने कहा की तुम मेरे भक्तों को कष्ट मत देना। मैनें तुरंत अपनी सहमति दे दी। अन्त में राम रावण युद्ध में मैने रावण को परिवार सहित नष्ट करने में अपनी कुदृष्टि का भरपूर प्रयोग किया। परिणामस्वरूप श्री राम की विजय हुई। [3]

सामान्यतः शनि को कष्ट देने वाला ग्रह माना गया है परन्तु वास्तव में शनि को दंड नायक का पद प्राप्त है जिसके कारण लोगो के कर्मो का फल शनि को कष्ट के रूप में प्रदान करना पड़ता है अनेक साहित्यों से ज्ञात होता है की रामायण काल में विद्वानों द्वारा शनि की स्थिति का विचार मुख्य रूप से किया जाता था

[2] दूबे,प. शि."हनुमान लीलामृत एवं शिक्षायें

[3] शर्मा,प.श्री.कृ.(२०१४)."मैं शनि हूँ", कल्याण(ज्योतिषतत्वांक), गीताप्रेस गोरखपुर

तथा जन सामान्य में सामान्य रूप से शनि के प्रति भय एवं श्रद्धा व्याप्त थी|

संदर्भ ग्रंथ:

1. वाल्मीकि रामायण

2. रामचरितमानस

3. पù पुराण

4. हनुमान लीलामृत एवं शिक्षाए

5. शर्मा, श्री कृष्णः कल्याण विषेषांक 2014, गीताप्रेस गोरखपुर।